परमात्म ऊर्जा

जब संस्कार बापदादा के सामान बन जायेंगे तो बापदादा का स्वरूप सभी को देखने में आएगा। जैसे बापदादा वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्त्तव्य, वही ही बोल, वही संकल्प होने चाहिए फिर सभी के मुख से निकलेगा कि यह तो वही लगते हैं। सूरत अलग होगी, सीरत वही होगी। लेकिन सूरत में सीरत आनी चाहिए। अब बापदादा बच्चों से यही उम्मीद रखते हैं। सभी हैं ही स्नेही सफलता के सितारे, पुरुषार्थी सितारे। सर्विसएबुल बच्चों का पुरुषार्थ सफलता सहित होता है। निमित्त पुरुषार्थ करेंगे लेकिन सफलता है ही है। अब समझा क्या करना है? जो सोचेंगे, कहेंगे वही करेंगे। जब ऐसे शब्द सुनते हैं कि सोचेंगे, देखेंगे विचार तो ऐसा है। तो हँसते हैं कि अब तक यह क्यों? अब यह बातें ऐसी लगती हैं जैसे बुजुर्ग होने के बाद कोई गुड्डियों का खेल करें तो क्या लगता है? तो बापदादा भी मुस्कुराते हैं- बुजुर्ग होते भी कभी-कभी बचपन का खेल करने में लग जाते हैं। गुड्डियों का खेल क्या होता है, मालूम है? उनको छोटे से बड़ा करते, फिर स्वयंवर करते। वैसे बच्चे भी कई बातों की, संकल्पों की रचना करते हैं फिर उसकी पालना करते हैं, उनको बड़ा करते और फिर उनसे खुद ही तंग होते हैं। तो यह गुड्डियों का खेल नहीं हुआ? खुद ही अपने से आश्चर्य भी खाते हैं। अब ऐसी रचना नहीं रचनी है। बापदादा व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं। और बच्चे भी व्यर्थ रचना रचकर फिर उनसे हटने और मिटाने का पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए ऐसी रचना नहीं रचनी है। एक सेकंड में सुलटी रचना भी क्विक रचते हैं और उल्टी रचना भी इतनी तेज़ी से होती है। एक सेकंड में कितने संकल्प चलते हैं। रचना रचकर उसमें समय देकर फिर उनको खत्म करने के लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता है। अब इस रचना को ब्रेक लगाना है।

चंद्रपुर-महा.। 'जीवन का पासवर्ड खुशी' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. सचिन परब,प्रसिद्ध तनाव प्रबंधन प्रशिक्षक,सलाहकार,प्रशिक्षण एवं विकास मुम्बई, पल्लवी गाडगे,डिप्टी कलेक्टर,चंद्रपुर, शालिक मौलिकर,जिला चिकित्सा प्रशासनिक अधिकारी, सुरेश लहानु अस्कर पुलिस निरीक्षक, ब्र.कु. कुंदा बहन,प्रभारी,ब्रह्माकुमारीज़ चंद्रपुर तथा ब्र.कु. नरेंद्र भाई।

कथा सरिता

बहुत समय पहले की बात है हंसपुर गांव में हरीश नाम का व्यक्ति और उसकी पत्नी मधु रहते थे। हरीश चाय की एक छोटी-सी दुकान लगाता था जिससे उनका जीवन यापन हो रहा था। हरीश स्वभाव से बहुत मददगार और अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति था।

जब भी चाय की दुकान में उसके 2-3 बेरोजगार दोस्त और कोई भीख मांगने वाला व्यक्ति आ जाता था तो उनको हरीश बिना पैसे लिए ही चाय पिला देता था। जिससे कोई खास बचत नहीं हो पाती थी। यह बात उसने अपनी पत्नी को बताई तो उसकी पत्नी मधु बोली कोई बात नहीं आप लोगों का भला ही तो कर रहे हैं। इसी तरह समय बीतता जा रहा था, हरीश अपने दुकान में आने वाले व्यक्तियों से बात करता और उनका हाल-चाल जानता जिससे उसको उनके बारे में भी पता चल जाता था।

एक दिन वहाँ चाय पीने आने वाले व्यक्ति को 500 रूपए की ज़रूरत थी तो उसने हरीश से रूपए मांगे कि उसको अपनी बीवी के इलाज के लिए डॉक्टर के पास लेकर जाना है। इसलिए उसको पैसों की सख्त ज़रूरत है थी और उसने कहा कि वह यह रूपए 2 दिन में लौटा देगा। हरीश दूसरों की परेशानियों को समझता था उसने उस व्यक्ति को 500 रूपए 2 दिन के लिए दे दिए।

2 दिन के बाद उस व्यक्ति ने वह रूपए हरीश को लौटा दिए। उसके बाद एक दूसरे व्यक्ति को और जिसको रूपए की ज़रूरत थी।

दुआयें ही हमें आगे ले जाती हैं

उसको पता चला कि हरीश चाय वाले ने एक व्यक्ति को 2 दिन के लिए रूपए देकर उसकी मदद की। वह व्यक्ति हरीश से बोला मुझे रूपए की सख्त ज़रूरत है इसलिए मुझे 1000 रूपए दे दो जिसको वह 3 दिन के बाद लौटा देगा। जिस तरह आपने उस व्यक्ति की मदद की थी आप मेरी भी मदद कर दो। पहले तो हरीश ने मना किया इतने रूपए देने के लिए, लेकिन उस व्यक्ति के गुज़ारिश करने के बाद हरीश ने उस व्यक्ति को भी 1000 रूपए दे दिए।

3 दिन के बाद उस व्यक्ति ने हरीश को 1200 रूपए दिए। हरीश ने बोला आपने 200 रूपए ज़्यादा दिए हैं। उस व्यक्ति ने हरीश को बोला कि आपने मेरी उस वक्त मदद की जब मुझे कोई रूपए नहीं दे रहा था, यह उसके लिए है। आप इसको रख लीजिए। हरीश बहुत खुश हुआ और अपने घर पर अपनी बीवी के लिए मिठाई लेकर गया और उसने अपनी बीवी को सारी बात बताई। इसके बाद बहुत से लोगों को पता चल गया कि हरीश ज़रूरत के समय लोगों की पैसे देकर मदद करता है। हरीश अब पैसे से मदद करने के लिए कुछ रूपए चार्ज करने लगा। जिससे उसने कुछ समय में ही बहुत पैसे कमा लिए और वह अपने गाँव में प्रसिद्ध हो गया।

अब हरीश ने एक चाय की अच्छी दुकान खोल ली लेकिन उसका मुख्य काम चाय बेचने की जगह पैसे उधार में देने का ज़्यादा हो गया। जिसके कारण वह अपने गांव के साथ-साथ आस-पास के गावों में भी प्रसिद्ध हो गया। अब लोग उसको किसी भी कार्यक्रम में सम्मानित व्यक्ति के रूप में बुलाने लगे जिससे उसका खूब नाम हो गया।

जब गांव में मुखिया के चुनाव होने लगे तो सबने हरीश को मुखिया का चुनाव लड़ने को कहा। सबकी बात मानकर वह मुखिया का चुनाव लड़ा और लोगों की मदद और पैसे उधार देने के कारण गांव के सब लोग उसको पसंद करते थे। जिसके कारण वह चुनाव जीत गया। अब हरीश गांव का मुखिया बन चुका था जिससे वह लोगों की और मदद कर पा रहा था। हरीश और उसकी बीवी मधु के अब अच्छे दिन आ गए थे जिससे वह अब खुशी-खुशी से रहने लगे।

इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के उद्घाटन एवं 'ज्ञानदीप भवन' के छठवें वार्षिकोत्सव व स्नेह मिलन कार्यक्रम के दौरान अशोक शर्मा,इंदौर सराफा एसोसिएशन के उपाध्यक्ष, अर्पित जैन,अखिल भारतीय जैन युवा परिषद् के अध्यक्ष, राहुल नीमा,जलगांव ज्वेलर्स, कमल सेठी,प्रखर वक्ता, नरेंद्र वर्मा,एन.के. बिल्डर्स, सुरेश पिपलोदिया,पत्रकार, दीनानाथ बंसल, राजेंद्र गर्ग, इंदौर ज़ोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. छाया बहन, ब्र.कु. भावना बहन, ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन, ब्र.कु. ललिता बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बीदर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय 10वें 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के दौरान ब्र.कु. सुनंदा बहन, ब्र.कु. पार्वती बहन, श्रीदेवी हुगार,सीआरपी बीदर, डॉ. विट्ठल रेड्डी,मेजर,एनसीसी ऑफिसर बीवीबी कॉलेज बीदर, हनुमंतराव भरसेट्टी,डिस्ट्रिक्ट सेक्रेट्री,भारत सकाउट्स एंड गाइड्स, विजय कुमार,बीईओ बीदर, शिल्पा मैडम,प्रिंसिपल,नवीन पब्लिक स्कूल बीदर, काशीनाथ कोंडा,रिटायर्ड बीएसएनएल अधिकारी, पंढरीनाथ भंडारे,रिटायर्ड एग्रीकल्चर ऑफिसर, देवेंद्र जी आदि शरीक हुए। 120 से अधिक बच्चों ने इस समर कैम्प में हिस्सा लिया।